INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RO/ARO

समीक्षा अधिकारी / सहायक समीक्षा अधिकारी

उत्तर प्रदेश सरकार

LATEST EDITION

HANDWRITTEN NOTES

उ. प्र. लोक सेवा आयोग

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग-3 भारत का इतिहास + संस्कृति

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

उ.प्र. RO /ARO

समीक्षा अधिकारी / सहायक समीक्षा अधिकारी

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 3

भारत का इतिहास + संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"उ. प्र. समीक्षा अधिकारी/ सहायक समीक्षा अधिकारी (RO/ARO)"** को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"उ. प्र. समीक्षा अधिकारी/ सहायक समीक्षा अधिकारी" परीक्षा** में पूर्ण संभव मदद करेंगे।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/d5wdiv

Online Order करें - https://shorturl.at/besw4

मूल्य : (₹)	**संस्करण : नवीनतम**

क्रम सं.	अध्याय	पेज नंबर
	प्राचीन भारत का इतिहास	
1.	भारत के सांस्कृतिक आधार	1
2.	प्राचीन एवं मध्य कालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन	14
3.	प्रमुख राजवंशों के महत्त्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ	31
4.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तुकला	58
5.	प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास	87
मध्यकालीन भारत		
1.	अरब आक्रमण	102
2.	सल्तनत काल	105
3.	मुग़ल काल	119
4.	मध्यकाल में कला एवं वास्तु	124
5.	भक्ति तथा सूफी आंदोलन	131
आधुनिक भारत का इतिहास		
1.	यूरोपीय कम्पनियों का आगमन	137
2.	राष्ट्रवाद का उदय	158

3.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन	183
4.	स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन	232
	<u>भारतीय संस्कृति</u>	
1.	भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य	249
2.	भारतीय चित्रकला	252
3.	भारतीय नृत्य कलाएं	253
4.	मुगलकालीन प्रमुख इमारतें	255
5.	भारत के प्रमुख मंदिर	259

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय – 1

भारत के सांस्कृतिक आधार

- ***सिन्धु घाटी सभ्यता***

  इतिहास का अध्ययन : -

  इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. *प्रागैतिहासिक काल*
2. *आद्य ऐतिहासिक काल*
3. *ऐतिहासिक काल*

1. प्रागैतिहासिक काल -

- *वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।*
- ***मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।*

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- *आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।*
- *इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।*
- *इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।*
- *इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की हैं ।*

- ***राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती हैं अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता हैं।*

3. ऐतिहासिक काल

*ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।*

सिन्धु घाटी सभ्यता

- *यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।*
- *इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।*

  इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

  - *सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।*
  - *सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया*
  - *वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया*
  - *प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया*
  - *सरस्वती सभ्यता ।*
  - *मेलूहा सभ्यता ।*
  - *कांस्यकालीन सभ्यता ।*

- *यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।*
- *सरस्वती सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।*
- *1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।*
- *जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।*
- *1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।*
- *1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।*

- ***सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -***
  - *प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी*
  - *भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।*
  - *मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।*

- ***सिन्धु सभ्यता की तिथि***

  कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.

  ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.

  मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

  सभ्यता का विनाश

मैके → मार्शल

नदी में बाढ़ के कारण

एस.आर.राव

व्हीलर → गार्डन चाइल्ड

बाह्य आक्रमण

पिगट

जलवायु परिवर्तन → आरेल स्टाइन

अमला नन्द घोष

प्राकृतिक आपदा - केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार→

- इस सभ्यता का विस्तार **अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत** में ही मिलता है।

अफगानिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

शोर्तुघई और मुंडिगक अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के एकमात्र स्थल हैं।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं ।

मोहनजोदड़ों　　हड़प्पा
चन्हूदड़ों　　डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी　　रहमान टेरी
आमरी　　गुमला
अलीमुराद　　जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा- राखीगढ़ी,** सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब –** कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा रोपड़ (रूपनगर) - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल**
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - **सनौली**
- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिख्खी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर

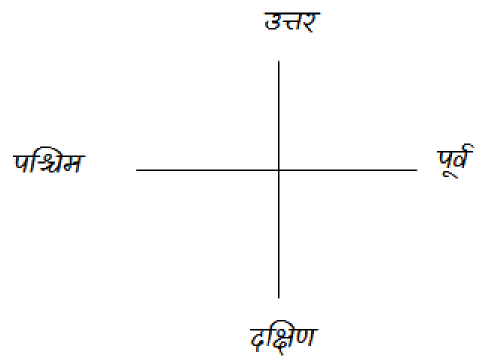

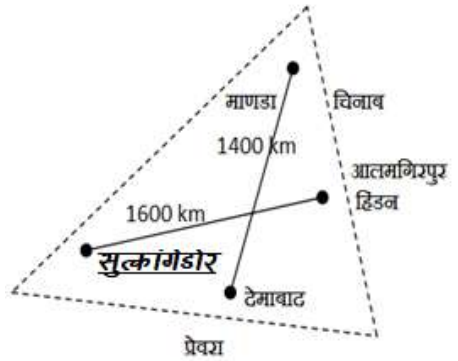

स्थल	**नदियों के नाम**	**उत्खन्न का वर्ष**	**उत्खननकर्ता**	**वर्तमान स्थिति**
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)

रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंड़न	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धोंलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द्र नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- सिन्धु सभ्यता के 7 नगर
  - हड़प्पा
  - बनावली
  - मोहनजोदड़ों
  - घौलावीरा
  - चन्हूदड़ों
  - लोथल
  - कालीबंगा

महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं

- **हड़प्पा**

  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।

  खोज- वर्ष 1921 में

  उत्खनन-

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।
ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
iii. 1996 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा

- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- **पिगट ने** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है ।
- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया ।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं ।

  पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण है।

मोहनजोदड़ों

- **सिन्धु नदी** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने की थी।
- **उत्खनन** - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डेल्स
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को **स्तूपों का शहर** भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले **चाँदी के दो सिक्के** मिले हैं ।
- **वस्त्र निर्माण** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण – मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है । (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक **20 खम्भों वाला सभाभवन** मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।

- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं।
- बड़ी संख्या में **कुओं** की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला **विशाल स्नानागार** भी यहीं से प्राप्त हुआ है।
  मार्शल- आश्चर्यजनक निर्माण

कालीबंगा-

- खोज **अमलानन्द घोष** द्वारा **गंगानगर** में
- **सरस्वती नदी** (वर्तमान **घग्घर** के तट पर)
- कालीबंगा **वर्तमान में हनुमानगढ़** में है।
- **उत्खनन - बी.बी लाल** 1953 में
  वी. के. थापड़
- कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी है।
- एक साथ **दो फसलों की बुवाई** तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है।
- **सड़कों को पक्का** बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है।
- **युग्म शवाधान** का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं।
- **भूकम्प** आने के प्राचीनतम प्रमाण यहीं से प्राप्त हुए हैं।
- **वृषभ की ताम्रमूर्ति** भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है।
- यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।

चन्हूदड़ों-

- खोज- **एन. जी. मजूमदार** – सिन्धु तट पर डकैतों ने हत्या कर दी।
- उत्खनन -**मैके** ने किया।
- सिन्धु सभ्यता का यह **औद्योगिक शहर** था।
- यहाँ **मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप** के बटखड़े बनाने का काम होता था।
- सिन्धु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले।

लोथल

- **साबरमती एव भोगवा नदी के संगम** पर ज्यादातर हिस्सा भोगवा के तट पर
- खोज एस. आर. राव **(रंग नाथ राव)**
  - लघु हड़प्पा
  - लघु मोहनजोदड़ों की संज्ञा
- बन्दरगाह या जल भण्डार या **गोदीबाड़ा** यहाँ की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है।
- लोथल का बन्दरगाह ही सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारती संरचना है।
- लोथल से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार **अग्निवेदी** पाई गई हैं।
- लोथल का मिश्र एवं मेसोपोटामिया के साथ सीधा व्यापार होता था।
- लोथल का दुर्ग शासक का आवास था ।

धौलावीरा

- खोज- **जे.पी. जोशी** द्वारा - (1967-68) में मनहर एवं मानसेहरा नदियों के बीच कादिर द्वीप पर खोज की।
- धौलावीरा एक **आयताकार नगर** था। जो तीन भागों में विभक्त था।
- धौलावीरा से **जल-प्रबंधन के साक्ष्य** प्राप्त हुये हैं।
- भारत के विशालतम सिन्धु सभ्यता स्थल धौलावीरा तथा राखीगढ़ी है।
- धौलावीरा से **घोड़े की कलाकृतियों** के अवशेष मिले हैं।

सुरकोटड़ा

- **घोड़े की अस्थियों** के साक्ष्य मिले हैं।
  - मिट्टी से बनी घोड़े की आकृति- मोहनजोदड़ों
  - घोड़े की हड्डियां- सुरकोटड़ा
  - **तीन मृणमूर्तियाँ - लोथल**

बनावली

- **रंगोई नामक नदी** के तट पर
- यहाँ से मिट्टी का हल, बटखरा तथा बहुत सारे **घरों में अग्निकुण्ड** के साक्ष्य मिले।
- बनावली **समृद्ध लोगों का नगर** था।

रोपड़

- **सतलज नदी के बायें तट** पर स्थित
- **आधुनिक नाम रूपनगर**
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सैंधव सभ्यता का उत्खनित स्थल (भारत का)
- खोज-**बी.बी. लाल 1950**
- उत्खनन- **यज्ञ दत्त शर्मा** 1953-56
- रोपड़ से एक ऐसा कब्रिस्तान मिला है जहां **मनुष्य के साथ पालतू कुत्ता भी दफनाया** गया है।

राखीगढ़ी

- भारत में स्थित सबसे बड़ा सिन्धु सभ्यता स्थल

मांडा - उ.प्र.

- 7 नवीनतम उत्खनित स्थल।
- टकसाल गृह का साक्ष्य।
- घोड़े की हड्डियों के साक्ष्य मिले हैं।
  - मिट्टी से बनी घोड़े की आकृति- मोहनजोदड़ों
  - घोड़े की हड्डियां- सुरकोटड़ा
  - तीन मृणमूर्तियाँ - लोथल

- गुप्त वंश के समय में भारत 'सोने की चिड़िया' कहलाता था।
- काव्यालंकार सूत्र में समुद्रगुप्त का नाम 'चंद्रप्रकाश' मिलता है।
- कुमारगुप्त के शासनकाल में ही नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी।
- गुप्त काल में मंदिरों का निर्माण ऊँचे चबूतरे पर किया जाता था, तथा छत सपाट होती थी।
- गुप्त काल की हरिषेण लिखित चंपू शैली में गद्य-पद्य को मिश्रित रूप में लिखा जाता था।
- गुप्तकाल के प्रसिद्ध खगोलशास्त्री द्वारा वराहमिहिर ने वृहत्संहिता तथा पंचासिद्धांतिका ग्रंथों की रचना की।
- गुप्तकालीन गणितज्ञ आर्यभट्ट ने आर्यभट्टीय तथा दशमलव प्रणाली की रचना की।
- वाग्भट्ट आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टांगहृदय' की रचना की।
- आयुर्वेदाचार्य एवं चिकित्सक धनवंतरी चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में था।
- चालुक्य वंश की वास्तविक नींव डालने वाला व्यक्ति पुलकेशिन प्रथम था।
- चालुक्यों का एहोल का विष्णु मंदिर उड़ते हुए देवताओं की सुंदर मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
- महाबलीपुरम के एकाश्म मंदिर का निर्माण पलल्व राजा नरसिंह वर्मन प्रथम द्वारा किया गया था ।
- द्रविड़ शैली की स्थापना पल्लव नरेशों के शासनकाल में हुई।
- चोल वंश के संस्थापक विजयालय थे, तथा राजधानी तंजौर थी।
- नटराज शिव की काँस्य प्रतिमा का निर्माण चोल शासकों के शासनकाल में हुआ था।

अध्याय – 5

प्राचीन भारत में कला एवं वास्तुकला

- ***सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं***
- नदी की घाटी में कला का उद्भव ईसा पूर्व तीसरी सह शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। इस सभ्यता के विभिन्न स्थलों से कला के जो रूप प्राप्त हुए हैं, उनमें प्रतिमाएँ, मुहरें, मिट्टी के बर्तन, आभूषण, पकी हुई मिट्टी की मूर्तियाँ आदि शामिल हैं। उस समय के कलाकारों में निश्चित रूप से उच्च कोटि की कलात्मक सूझ-बूझ और कल्पनाशक्ति विद्यमान थी।
- **सिन्धु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख स्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ो** नामक दो नगर थे, जिनमें से हड़प्पा उत्तर में और मोहनजोदड़ो दक्षिण में सिन्धु नदी के तट पर बसे हुये थे। ये दोनों नगर सुंदर नगर नियोजन की कला के प्राचीनतम उदाहरण थे।
- इन नगरों में रहने के मकान, बाजार, भंडार घर, कार्यालय, सार्वजनिक स्नानागार आदि सभी अत्यंत व्यवस्थित रूप से यथास्थान बनाए गए थे। इन नगरों में जल निकासी की व्यवस्था भी काफी विकसित थी। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो इस समय पाकिस्तान में स्थित हैं।
- कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों से भी हमें कला-वस्तुओं के नमूने मिले हैं, जिनके नाम हैं- लोथल और धौलावीरा (गुजरात), राखीगढ़ी (हरियाणा), रोपड़ (पंजाब) तथा कालीबंगा (राजस्थान)।

पत्थर की मूर्तियाँ

- हड़प्पाई स्थलों पर पाई गईं मूर्तियाँ, भले ही वे पत्थर, कांसे या मिट्टी की बनी हों, संख्या की दृष्टि से बहुत अधिक नहीं हैं पर कला की दृष्टि से उच्च कोटि की हैं। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में पाई गई
- पत्थर की मूर्तियाँ त्रि-आयामी वस्तुएं बनाने का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। पत्थर की मूर्तियों में दो पुरुष प्रतिमाएं बहुचर्चित हैं, जिनमें से एक पुरुष धड़ है, जो लाल चूना पत्थर का बना है और दूसरी दाढ़ी वाले पुरुष की आवक्ष मूर्ति है, जो सेलखड़ी की बनी है।
- दाढ़ी वाले पुरुष को धार्मिक व्यक्ति माना जाता है। इस आवक्ष एक मूर्ति को शॉल ओढ़े हुए दिखाया गया है। शॉल बाएं कंधे के ऊपर से और दाहिनी भुजा के नीचे से डाली गई है। शॉल त्रिफुलिया नमूनों से सजी हुई है। आँखें कुछ लंबी और आधी बंद दिखाई गई हैं, मानों वह पुरुष ध्यानावस्थित हो।
- कान सीप जैसे दिखाई देते हैं और उनके बीच में छेद हैं। बालों को बीच की मांग के द्वारा दो हिस्सों में बाँटा गया है और सिर के चारों ओर एक सादा बना हुआ

फीता बंधा हुआ दिखाया गया है। दाहिनी भुजा पर एक बाजूबंद है और गर्दन के चारों ओर छोटे-छोटे छेद बने हैं जिससे लगता है कि वह हार पहने हुए है ।

कांसे की ढ़लाई

- *हड़प्पा के लोग कांसे की ढ़लाई बड़े पैमाने पर करते थे और इस काम में प्रवीण थे। इनकी कांस्य मूर्तियाँ कांसे को ढ़ालकर बनाई जाती थी। इस तकनीक के अंतर्गत सर्वप्रथम मोम की एक प्रतिमा या मूर्ति बनाई जाती थी।*
- *इसे चिकनी मिट्टी से पूरी तरह लीपकर सूखने के लिए छोड़ दिया जाता था। जब वह पूरी तरह सूख जाती थी तो उसे गर्म किया जाता था और उसके मिट्टी के आवरण में एक छोटा सा छेद बनाकर उस छेद के रास्ते सारा पिघला हुआ मोम बाहर निकाल दिया जाता था ।*
- *इसके बाद चिकनी मिट्टी के खाली सांचे में उसी छेद के रास्ते पिघली हुई धातु भर दी जाती थी। जब वह धातु ठंडी होकर ठोस हो जाती थी तो चिकनी मिट्टी के आवरण को हटा दिया जाता था।*
- *कांस्य में मनुष्यों और जानवरों दोनों की ही मूर्तियाँ बनाई गई हैं।* ***मानव मूर्तियों का सर्वोत्तम नमूना है एक लड़की की मूर्ति, जिसे नर्तकी के रूप में जाना जाता है।*** *कांसे की बनी हुई जानवरों की मूर्तियों में भैंस और बकरी की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भैंस का सिर और कमर ऊँची उठी हुई है तथा सींग फैले हुए हैं।* ***सिन्धु सभ्यता के सभी केंद्रों में कांसे की ढ़लाई का काम बहुतायत में होता था।***

मृणमूर्तियाँ (टेराकोटा)

- *सिन्धु घाटी के लोग मिट्टी की मूर्तियाँ भी बनाते थे लेकिन वे पत्थर और कांसे की मूर्तियों जितनी बढ़िया नहीं होती थीं। सिन्धु घाटी की मूर्तियों में* ***मातृदेवी की प्रतिमाएं अधिक*** *उल्लेखलीय हैं।*
- *कालीबंगा और लोथल में पाई गई नारी मूर्तियाँ हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में पाई गई मातृदेवी की मूर्तियों से बहुत ही अलग तरह की हैं। मिट्टी की मूर्तियों में कुछ दाढ़ी-मूँछ वाले ऐसे पुरुषों की भी छोटी-छोटी मूर्तियाँ पाई गई हैं, जिनके बाल गुंथे हुए (कुंडलित) हैं, जो एकदम सीधे खड़े हुए हैं, टांगें थोड़ी चौड़ी हैं और भुजाएं शरीर के समानांतर नीचे की ओर लटकी हुई हैं।*
- *ठीक ऐसी ही मुद्रा में मूर्तियाँ बार-बार पाई गईं हैं, जिससे यह प्रतीत होता है कि ये किसी देवता की मूर्तियाँ हैं। एक सींग वाले देवता का मिट्टी का बना मुखौटा भी मिला है। इनके अलावा, मिट्टी की बनी पहिएदार गाड़ियाँ, छकड़े, सीटियाँ, पशु-पक्षियों की आकृतियाँ, खेलने के पासे, गिट्टियाँ, चक्रिका (डिस्क) भी मिली हैं।*

मुद्राएँ (मुहरें)

- *पुरातत्वविदों को हज़ारों की संख्या में मुहरें (मुद्राएं) मिली हैं, जो आमतौर पर सेलखड़ी और कभी-कभी गोमेद, चकमक पत्थर, तांबा, कांस्य और मिट्टी से बनाई गई थीं। उन पर एक सींग वाले साँड़, गैंडा, बाघ, हाथी, जंगली भैंसा, बकरा, भैंसा आदि पशुओं की सुंदर आकृतियाँ बनी हुई थीं।*
- *इन आकृतियों में प्रदर्शित विभिन्न स्वाभाविक मनोभावों की अभिव्यक्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन मुद्राओं को तैयार करने का* ***उद्देश्य मुख्यतः वाणिज्यिक था।*** *ऐसा प्रतीत होता है कि ये मुद्राएं बाजूबंद के तौर पर भी कुछ लोगों द्वारा पहनी जाती थीं जिनसे उन व्यक्तियों की पहचान की जा सकती थी, । जैसे कि आजकल लोग पहचान पत्र धारण करते हैं।*
- *हड़प्पा की मानक मुद्रा 2x2 इंच की वर्गाकार पटिया होती थी, जो आमतौर पर सेलखड़ी से बनाई जाती थी। प्रत्येक मुद्रा में एक चित्रात्मक लिपि खुदी होती थी जो अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। कुछ मुद्राएँ हाथीदांत की भी पाई गई हैं।*
- *मुद्राओं के डिज़ाइन अनेक प्रकार के होते थे पर अधिकांश में कोई जानवर, जैसे कि कूबड़दार या बिना कूबड़ वाला साँड़, हाथी, बाघ, बकरे और दैत्याकार जानवर बने होते हैं।*
- *उनमें कहीं-कहीं पेड़ों और मानवों की आकृतियाँ भी बनी पाई गई हैं। इनमें* ***सबसे अधिक उल्लेखनीय एक ऐसी मुद्रा है जिसके केंद्र में एक मानव आकृति और उसके चारों ओर कई जानवर बने हैं।*** *इस मुद्रा को कुछ विद्वानों द्वारा* ***पशुपति मुद्रा कहा जाता है*** *(आकार 1/2 से 2 इंच तक के वर्ग या आयत के रूप में) जबकि कुछ अन्य इसे किसी देवी की आकृति मानते हैं। इस मुद्रा में एक मानव आकृति पालथी मारकर बैठी हुई दिखाई गई है।*
- *इस मानव आकृति के दाहिनी ओर एक हाथी और एक बाघ (शेर) है जबकि बाँयी ओर एक गैंडा और भैंसा दिखाए गए हैं। इन पशुओं के अलावा, स्टूल के नीचे दो बारहसिंगे हैं। इस तरह की मुद्राएं 2500-1900 ई. पू. की हैं और ये सिन्धु घाटी के प्राचीन नगर मोहनजोदड़ों जैसे अनेक पुरास्थलों पर बड़ी संख्या में पाई गई हैं। इनकी सतहों पर मानव और पशु आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं।*
- *इन मुद्राओं के अलावा, तांबे की वर्गाकार या आयताकार पट्टियाँ (टैबलेट) पाई गई हैं, जिनमें एक ओर मानव आकृति और दूसरी ओर कोई अभिलेख अथवा दोनों ओर ही कोई अभिलेख है। इन पट्टियों पर आकृतियाँ और अभिलेख किसी नोकदार औजार (छेनी) से सावधानीपूर्वक काटकर अंकित किए गए हैं। मृद्भाण्ड*

- चूँकि हर राजा अवशेषों को अपने राज्य में ले जाना चाहता था और कोई भी समझौते के लिए तैयार नहीं था इसलिये हालात युद्ध जैसे बन गये।
- **बुद्ध की मृत्यु कुशीनगर में हुई थी** जो कि मल्लाओं की राजधानी थी। इस विवाद का निपटारा एक द्रोण नामक ब्राह्मण ने किया और उसने सुझाया के बुद्ध के अवशेषों को आपस में बाँट लिया जाये। और फिर कुशीनगर में ही बुद्ध के अवशेषों को मल्ल और सात अन्य राजाओं के बीच बाँट लिया गया।
- इन अवशेषों को भारत के अलग-2 स्थानों में ले जाकर धरती में गाड़ दिया गया और उनके ऊपर एक विशेष प्रकार की आकृति का निर्माण करवाया गया जिसे स्तूप नाम दिया गया।
- **स्तूप संस्कृत भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है। "ढ़ेर"**
- बौद्ध धर्म में आज अगर किसी प्रतीक चिन्ह् का सबसे ज्यादा महत्व है तो वह स्तूप है।
- स्तूप बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिये आस्था का वह प्रतीक है जिसे वह सीधे तौर पर बुद्ध के बाद स्थान देते हैं।
- उनका मानना है कि आज भी बुद्ध स्तूप में निवास करते हैं और उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं।
- इन स्तूपों में सबसे **प्रमुख और प्रसिद्ध साँची, सारनाथ, अमरावती और मस्त के स्तूप हैं।**
- कुछ समय बाद बुद्ध ने यह उत्तर दिया कि मेरे शरीर के अवशेषों पर एक संरचना का निर्माण करवाना जिसे मेरी मृत्यु के बाद एक प्रतीक के रूप में देखा जाए।
- लगभग 80 वर्ष की आयु में बुद्ध ने अपने शरीर का त्याग कर दिया।
- अशोक ने बुद्ध धर्म का प्रचार प्रसार सबसे ज्यादा कराया, उन्होंने गौतम बुद्ध के अवशेषों को सुदूर क्षेत्रों में भी पहुँचाया, जहाँ कुछ और बौद्ध स्तूप बनाये गये।
- ये स्तूप आज सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि कई अन्य देशों में भी पाये जाते हैं। फिर चाहे वह तक्षशिला का धर्मराजिका स्तूप हो या या श्रीलंका का जेतवानारम्या स्तूप या फिर इंडोनेशिया में स्थित बोरुबदूर इन सभी स्तूपों का अपना-अपना महत्व है।
- बौद्ध भिक्षु इन स्तूपों को बुद्ध का प्रतीक मानकर न सिर्फ इनकी परिक्रमा करते हैं बल्कि यहाँ बैठकर ध्यान भी केन्द्रित करते हैं।
- यह स्तूप दूर से देखने पर एक अण्डाकार आकृति या अर्धगोलाकार आकृति में दिखते हैं और इन्हें कई चरणों में बाँटा जाता है जिनके अलग-2 नाम होते हैं।
- अगर मध्य प्रदेश में स्थित साँची के स्तूप की बात की जाए तो इसे भी कई भागों में बाँटा गया है।
- **मुख्य भाग जिसके नीचे अवशेषों को दबाया गया है उसे अण्ड कहते हैं** यह अण्डे की आकृति का एक Solid Structure होता है।
- अण्ड के ठीक ऊपर एक चौकोर संरचना बनाई जाती है जिसे **हर्मिका** कहा जाता है।
- हर्मिका के ऊपर यष्ठी का निर्माण किया जाता है और यह मान्यता है कि यष्ठी में भगवान बुद्ध विराजमान होते हैं जिनके ऊपर छत्र का निर्माण किया जाता है।
- बाह्य दुनिया से अलग करने के लिये स्तूप को एक boundary wall के द्वारा बंद कर दिया जाता है जिसे वेदिका कहा जाता है। जिसमें प्रवेश के लिये कुछ दरवाजे भी बनाये जाते हैं। इन दरवाजों को तोरण द्वार कहा जाता है।
- अगर सांची के स्तूप को देखें तो इसके तोरण द्वारों में सुन्दर नक्काशी का प्रयोग भी किया गया है।
- **सांची को UNESO ने 1989 में World Heritage Site में भी शामिल किया है।**
- वैसे तो सांची में कई सारे स्तूप है पर उनमें सबसे प्रमुख है ग्रेट स्तूप जो कि सबसे प्राचीन माना जाता है।
- साँची का स्तूप जो कि पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुका था उसको अंग्रेजी शासनकाल में Archaeological Survey of India की मदद से फिर से सुधारा गया, और आज यह पर्यटन का एक प्रमुख केन्द्र है।
- बौद्ध धर्म आज दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाले धर्मों में से एक है ऐसे में इन स्तूपों की महत्वता अपने आप बढ़ जाती है।

<u>मंदिर वास्तुकला</u>

- मंदिर निर्माण की प्रक्रिया का आरंभ तो मौर्य काल से ही शुरू हो गया था किंतु आगे चलकर उसमें सुधार हुआ और गुप्त काल को मंदिरों की विशेषताओं से लैस देखा जाता है।
- संरचनात्मक मंदिरों के अलावा एक अन्य प्रकार के मंदिर थे जो **चट्टानों को काटकर** बनाए गए थे। इनमें प्रमुख है **महाबलिपुरम का रथ-मंडप जो 5वीं शताब्दी का है।**
- गुप्तकालीन मंदिर आकार में बेहद छोटे हैं । एक वर्गाकार चबूतरा (ईंट का) है जिस पर चढ़ने के लिये सीढ़ी है तथा बीच में चौकोर कोठरी है जो गर्भगृह का काम करती है।
- कोठरी की छत भी सपाट है व अलग से कोई प्रदक्षिणा पथ भी नहीं है।
- इस प्रारंभिक दौर के निम्नलिखित मंदिर हैं जो कि भारत के प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर हैं: तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर, मध्यप्रदेश), भूमरा का शिव मंदिर (सतना, मध्यप्रदेश), नचना कुठार का पार्वती मंदिर

(पन्ना, मध्यप्रदेश), देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर, उत्तरप्रदेश), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर, उत्तरप्रदेश) आदि।

- मंदिर स्थापत्य संबंधी अन्य नाम, जैसे- पंचायतन, भूमि, विमान भद्रथ, कर्णरथ और प्रतिरथ आदि भी प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं।
- छठी शताब्दी ईस्वी तक उत्तर और दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला शैली लगभग एकसमान थी, लेकिन छठी शताब्दी ई. के बाद प्रत्येक क्षेत्र का भिन्न-भिन्न दिशाओं में विकास हुआ
- आगे ब्राह्मण हिन्दू धर्म के मंदिरों के निर्माण में तीन प्रकार की शैलियों नागर, द्रविड़ और बेसर शैली का प्रयोग किया गया।

मंदिर स्थापत्य

नागर	**द्रविड़**	**बेसर**
पाल उपशैली	पल्लव उपशैली	राष्ट्रकूट
ओडिशा उपशैली	चोल उपशैली	चालुक्य
खजुराहो उपशैली	पाण्डय उपशैली	काकतीय
सोलंकी उपशैली	विजयनगर उपशैली	होयसल
	नायक उपशैली	

क्रम	मंदिर	स्थल	कालखण्ड
1.	गोलाकार ईंट व इमारती लकड़ी का मंदिर	बैराट ज़िला राजस्थान	तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व
2.	साँची का मंदिर- 40	साँची (मध्य प्रदेश)	तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व
3.	साँची का मंदिर-18	साँची (मध्य प्रदेश)	द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व
4.	प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	चौथी शताब्दी ईसा पूर्व
5.	साँची का मंदिर-17	साँची (मध्य प्रदेश)	चौथी सदी
6.	लड़खन मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	पाँचवीं सदी ईस्वी सन्
7.	दुर्गा मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	550 ईस्वी सन्

भारतीय मंदिरों के स्थापत्य की नागर, द्रविड़ और वेसर शैलियाँ

पूर्व मध्यकालीन शिल्पशास्त्रों में मंदिर स्थापत्य की तीन बड़ी शैलियाँ बताई गई हैं – नागर शैली, द्रविड़ शैली और वेसर शैली।

नागर शैली – नागर शैली का प्रचलन **हिमालय और विन्ध्य पहाड़ों के बीच** की धरती में पाया जाता है।

द्रविड़ शैली – द्रविड़ शैली **कृष्णा और कावेरी नदियों के बीच** की भूमि में अपनाई गई।

वेसर शैली – वेसर शैली **विन्ध्य पहाड़ों और कृष्णा नदी के बीच** के प्रदेश से संबंध रखती है।

नागर शैली

इस शैली के सबसे पुराने उदाहरण **गुप्तकालीन मंदिरों में**, विशेषकर, देवगढ़ के दशावतार मंदिर और भीतरगाँव के ईंट-निर्मित मंदिर में मिलते हैं।

नागर शैली की दो बड़ी विशेषताएँ हैं – इसकी **विशिष्ट योजना और विमान।**

1. इसकी मुख्य भूमि आयताकार होती है जिसमें बीच के दोनों ओर क्रमिक विमान होते हैं जिनके चलते इसका पूर्ण आकार तिकोना हो जाता है। यदि **दोनों पार्श्वों में एक-एक विमान होता है तो वह त्रिरथ** कहलाता है। दो-दो विमानों वाले मध्य भाग को **सप्तरथ** और चार-चार विमानों वाले भाग को **नवरथ** कहते हैं। ये विमान मध्य भाग्य से लेकर के मंदिर के अंतिम ऊँचाई तक बनाए जाते हैं।
2. मंदिर के सबसे ऊपर शिखर होता है।
3. नागर मंदिर के शिखर को रेखा शिखर भी कहते हैं।
4. नागर शैली के मंदिर में दो भवन होते हैं – एक गर्भगृह और दूसरा मंडप। **गर्भगृह ऊँचा** होता है और **मंडप छोटा** होता है।
5. गर्भगृह के ऊपर एक घंटाकार संरचना होती है जिससे मंदिर की ऊँचाई बढ़ जाती है।
6. नागर शैली के मंदिरों में चार कक्ष होते हैं – गर्भगृह, जगमोहन, नाट्यमंदिर और भोगमंदिर।
7. प्रारम्भिक नागर शैली के मंदिरों में स्तम्भ नहीं होते थे।
8. 8वीं शताब्दी आते-आते नागर शैली में अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग नए लक्षण भी प्रकट हुए। बनावट में कहीं-कहीं विविधता आई। जैसा कि हम जानते हैं कि

- उद्योतकर ने न्यायभाष्य पर न्यायवार्तिक नामक टीका लिखी। वैशेषिक दर्शन-पद्धति पर आचार्य प्रशस्तपाद ने पदार्थ धर्मसंग्रह नामक ग्रंथ लिखा है। चन्द्र ने दशपदार्थ शास्त्र की रचना की।
- **गुप्तकाल में बौद्ध धर्म की दो शाखाएँ और उनकी दो-दो उपशाखाएँ विकसित हुई।** हीनयान की शाखाएँ थीं- थेरवाद (स्थविरवाद) और वैभाषिक (सर्वास्तिवाद) और महायान की थीं-माध्यमिक और योगाचार।
- असंग जो योगाचार से सम्बद्ध वज्रछेदिका टीका, योगाचार भूमिशास्त्र नामक ग्रंथ लिखे थे। वसुबंधु ने अभिधर्मकोश की रचना की। बुद्धघोष ने विशुद्धिमग्ग नामक ग्रंथ रचा जिसमें शील, समाधि आदि की विवेचना की गयी है।
- बौद्ध ग्रंथ विनयपिटक पर समंतपासादिका टीका की रचना की गई। बुद्धघोष ने सुमंगलविलासिनी की भी रचना की। यह दीर्घनिकाय से संबंधित सुवर्णप्रमास, राष्ट्रपाल परिपृच्छा आदि बौद्ध कृतियों का भी निर्माण किया गया।
- बहुत से जैन ग्रंथ भी गुप्तकाल में लिखे गये। जैनाचार्य सिद्धसेन ने तत्त्वानुसारिणी तत्त्वार्थटीका नामक ग्रंथ की रचना की।

भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक

शास्त्रीय नृत्य	संबंधित राज्य	प्रमुख नर्तक
भरतनाट्यम	तमिलनाडु	यामिनी कृष्णामूर्ति, टी बाला सरस्वती, रुक्मिणी देवी, सोनल मानसिंह, मृणालिनी साराभाई, वैजयन्ती माला, हेमामालिनी
कथकली	केरल	मृणालिनी साराभाई, गुरु शंकरन, नम्बूद्रीपाद, शंकर कुरूप, के सी पणिक्कर
मोहिनीअट्टम	केरल	भारती शिवाजी, तंकमणि शांताराव
कुचिपुड़ी	आंध्रप्रदेश प्रदेश	यामिनी कृष्णमूर्ति, राधा रेड्डी, राजा रेड्डी, स्वप्न सुन्दरी
कथक	उत्तर प्रदेश तथा रा जस्थान	बिरजू महाराज, अच्छन महाराज , गोपीकृष्ण , सितारा देवी , रोशन कुमारी , उमा शर्मा
ओडिसी	ओडिशा	प्रोतिमा देवी, संयुक्ता पाणिग्रही , सोनल मानसिंह, केलुचरण महापात्र, माधवी मुद्गल
मणिपुरी	मणिपुर	सूर्यमुखी देवी , गुरु विपिन सिंह

भारत के प्रमुख लोकनृत्य

राज्य	लोकनृत्य
असम	बिहू, खेलगोपाल , कलिगोपाल , बोई साजू , नटपूजा मीटू ।
पंजाब	कीकली, भाँगड़ा, गिद्दा
हिमाचल प्रदेश	जद्दा , नाटी , चम्बा, छपेली
हरियाणा	धमाल, खोरिया, फाग, डाहीकल
महाराष्ट्र	लेजिम, तमाशा, लावनी, कोली
जम्मू - कश्मीर	दमाली , हिकात, दण्डी नाच , राऊ , लडाखी
राजस्थान	गणगौर , झूमर , घूमर , झूलन लीला
गुजरात	गरबा, डाण्डिया रास, पणिहारी, रासलीला, लास्या, गणपति भजन
बिहार	जट - जाटिन, घुमकड़िया , कीर्तनिया , पंवारियाँ , सोहराई , सामा , चकेवा , जात्रा
उत्तर प्रदेश	डांगा, झींका, छाऊ, लुझरी, झोरा, कजरी, नौटंकी , थाली, जद्दा
केरल	भद्रकली , पायदानी , कुड़ीअट्टम , कालीअट्टम , मोहिनीअट्टम
पश्चिम बंगाल	करणकाठी , गम्भीरा , जलाया, बाउल नृत्य , कथि , जात्रा
नागालैण्ड	कुमीनागा , रैंगमनागा , लिम, चोंग, खेवा
मणिपुर	संकीर्तन , लाईहरौबा , थांगटा की तलम , बसन्तराम , राखाल
मिजोरम	चेरोकान , पाखुलिया नृत्य
झारखण्ड	सुआ , पंथी , राउत , कर्मा , फुलकी डोरला , सरहुल , पाइका , नटुआ , छऊ
ओडिशा	अग्नि , डंडानट , पैंका , जदूर , मुदारी , आया , सवारी , छाऊ
उत्तराखण्ड	चांचरी / झोड़ा , छपेली , छोलिया , झुमैलो , जागर , कुमायूँ नृत्य, चौंफल , छोलिया
कर्नाटक	यक्षगान , भूतकोला , वीरगास्से , कोडावा

आन्ध्र प्रदेश	घण्टा मर्दाला , बतकम्मा , कुम्मी , छड़ी , सिद्धि माधुरी
छत्तीसगढ़	सुआ करमा , रहस , राउत , सरहुल , बार , नाचा , घसिया बाजा , पंथी
तमिलनाडु	कोलट्टम , कुम्मी कारागम्
अरुणाचल प्रदेश	युद्ध नृत्य, **लायन एंड पीक डांस, रिखमपाड़ा नृत्य, बुईआ नृत्य, खांपटी नृत्य, बारडो छम, तापु नृत्य, दामिंडा डांस, पोंग नृत्य,**

प्रसिद्ध वाद्य यंत्र एवं वादक	
वाद्य यंत्र	**वादक**
बाँसुरी	हरिप्रसाद चौरसिया , रघुनाथ सेठ , पन्नालाल घोष , प्रकाश सक्सेना, देवेन्द्र मुक्तेश्वर, प्रकाश बढ़ेरा, राजेन्द्र प्रसन्ना
वायलिन	बालमुरली कृष्णन, गोविन्दस्वामी पिल्लई, टी एन कृष्णन, आर पी शास्त्री, संदीप ठाकुर, बी शशि कुमार, एन राजम
सरोद	अली अकबर खाँ , अलाउद्दीन खाँ, अशोक कुमार राय, अमजद अली खाँ
सितार	पं. रविशंकर, उस्ताद विलायत खाँ
शहनाई	बिस्मिल्ला खाँ, शैलेश भागवत, अनंत लाल, भोलानाथ तमन्ना, हरिसिंह
तबला	अल्ला रक्खा, जाकिर हुसैन, लतीफ खाँ, गुदई महाराज, अम्बिका प्रसाद
हारमोनियम	रवीन्द्र तालेगांवकर, अप्पा जुलगावकर, महमूद ब्रह्मस्वरूप सिंह , एस. बालचन्द्रन , असद अली , गोपालकृष्ण
वीणा	पं. शिवकुमार शर्मा, तरुण भट्टाचार्य
सारंगी	पं. रामनारायण, ध्रुव घोष , अरुण काले, आशिक अली खाँ, वजीर खाँ, रमजान खाँ
गिटार	विश्वमोहन भट्ट, ब्रजभूषण काबरा, केशव तालेगांवकर, नलिन मजूमदार

लोककला शैलियाँ

शैली	राज्य
रंगोली	महाराष्ट्र / गुजरात
अल्पना	पश्चिम बंगाल
मण्डाना , मेहँदी	राजस्थान
अरिपन, गोदना	बिहार
रंगवल्ली	कर्नाटक
ऐपण	उत्तराखंड
अदूपना	हिमाचल
चौक पूरना	उत्तर प्रदेश
कलमकारी, मुगगु	आंध्रप्रदेश
फुलकारी	हरियाणा
सथिया	गुजरात
कोल्लम	तमिलनाडु
कालम	केरल

वास्तुकला शैलियाँ

शैली	विशेषता	नमूने
नागर शैली	चतुर्भुजाकार भवन	सूर्य मन्दिर (कोणार्क), जगन्नाथ मन्दिर (पुरी), शैली भवन कन्दरिया महादेव मन्दिर (खजुराहो) , दिलवाड़ा जैन मन्दिर (माउण्ट आबू)
द्रविड शैली	गोलाकार भवन	कैलाश मन्दिर (काँची), रथ मन्दिर (मामल्लापरम), शैली भवन वृहदेश्वर मन्दिर (तंजौर)
बेसर शैली	आयताकार भवन	कैलाश मन्दिर (एलोरा), दशावतार मंदिर (देवगढ़ शैली भवन झाँसी)

भारतीय चित्रकला

भारतीय चित्रकारी के प्रारंभिक उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के हैं, जब मानव गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी किया करता था। भीमबेटका की गुफाओं में की गई चित्रकारी 5500 ई.पू. से भी ज्यादा पुरानी है। 7वीं शताब्दी में अजंता और एलोरा गुफाओं की चित्रकारी भारतीय चित्रकारी का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। भारतीय चित्रकारी में भारतीय संस्कृति की भांति ही प्राचीनकाल से लेकर आज तक एक विशेष प्रकार की एकता के दर्शन होते हैं। प्राचीन व मध्यकाल के दौरान भारतीय चित्रकारी मुख्य रूप से धार्मिक भावना से प्रेरित थी, लेकिन आधुनिक काल तक आते-आते यह काफी हद तक लौकिक जीवन का निरुपण करती है। आज भारतीय चित्रकारी लोकजीवन के विषय उठाकर उन्हें मूर्त कर रही है।

भारतीय चित्रकारी की शैलियां

भारतीय चित्रकारी को मोटे तौर पर भित्ति चित्र व लघु चित्रकारी में विभाजित किया जा सकता है।
गुफाओं की दीवारों पर की जाने वाली चित्रकारी को कहते हैं, उदाहरण के लिए अजंता की गुफाओं व एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर का नाम लिया जा सकता है। दक्षिण भारत के बादामी व सित्तानवसाल में भी भित्ति चित्रों के सुंदर उदाहरण पाये गये हैं। लघु चित्रकारी कागज या कपड़े पर छोटे स्तर पर की जाती है। बंगाल के पाल

- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर तथा बुक्का ने की जिसकी राजधानी तुंगभद्रा नदी के किनारे हम्पी थी।
- अल्लसानी पेड्डना को तेलगू कविता के पितामह की उपाधि दी गई, जिन्होंने 'मनु चरित' की रचना की।

अध्याय – 3

मुग़ल काल

- राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा
- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया, जिसमें लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की - दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलटकर रख दिया और मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी। **गुप्त वंश के पश्चात् मध्य भारत में केवल मुग़ल साम्राज्य ही ऐसा साम्राज्य था, जिसका एकाधिकार हुआ था।**
- **मुग़ल वंश का संस्थापक बाबर था,** अधिकतर मुग़ल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे, **मुग़ल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।**

<u>बाबर का शासन काल (1526 – 1530 ई.)</u>

- **बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज्बेकिस्तान का हिस्सा है।**
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। **बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।**
- **पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदिनी राय और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई।
- **घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई।
  <u>नोट</u> :- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया।
- **उसकी विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।**

- **पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए 'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।**
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों 'को (दिल्ली शासकों) सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर **अपने आप को 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।**
- **पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्त्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था। जिसमें विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण** की थी । इस युद्ध के लिए **अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था ।**
- साथ ही **मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी,** यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था। राजपूतों के विरुद्ध इस 'खानवा के युद्ध का प्रमुख कारण बाबर द्वारा भारत में ही रुकने का निश्चय था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- इसके बाद बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुक-ए- बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है ।
- इसमें बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है, जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- **बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है।** साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल-ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी ' भी कहा जाता है। बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। **साथ ही बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।**
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में **'आरामबाग'** के नाम से जाना जाता है। इसमें **चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है।**
- यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।

हुमायूँ (1530 ई. - 1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुग़ल वंश के शासन पर बैठा ।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।
- **हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खां था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।**
- हुमायूँ का अफगानों से **पहला मुकाबला 1532 ई. में दौहरिया 'नामक स्थान पर** हुआ। इसमें **अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।**
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खां की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुग़ल शासक के अधीन कर लिया। बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून, 1539 को चौसा के युद्ध में शेर खां ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खां ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बैठा। हुमायूँ को मजबूर होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1545 ई. में हुमायूँ ने कामरान से काबुल और गंधार छीन लिया।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह सूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 ई. को पुस्तकालय की सिढ़ियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय एवं उनके कार्य

- **गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय**
- **गवर्नर जनरलः**
- ब्रिटिश बौद्धिक जागरण; प्रेस; पश्चिमी शिक्षा।

भारत में 1773 ई. से 1857 ई. के बीच तेरह गवर्नर जनरल आए। इनके शासनकाल में निम्नांकित मुख्य घटनाएं एवं विकास हुए-:

वारेन हेस्टिंग (1772 - 1785)

- **दोहरी शासन प्रणाली]Dual Government System (की समाप्ति) जो बंगाल के गवर्नर (रबर्ट क्लाइव द्वारा शुरू किया गया था)।**
- **प्रथम गवर्नर जनरल बंगाल का वारेन हेस्टिंग्स था।**
- 1773 ई. रेग्यूलैटिंग एक्ट ।
- 1774 ई. में रोहिल्ला युद्ध एवं अवध के नवाब द्वारा रुहेलखण्ड पर अधिकार।
- 1781 ई. का एक्ट (इसके द्वारा गवर्नर जनरल परिषद् एवं कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट न्यायिक अधिकार क्षेत्र का निर्धारण किया गया।
- 1782 में सालबाई की संधि एवं (1775-82) में प्रथम मराठा युद्ध।
- **1784 ई. का पिट्स इंडिया एक्ट।**
- **द्वितीय मैसूर युद्ध (1780-84)**
- सुरक्षा प्रकोष्ठ या घेरे की नीति का संबंध (वारेन हेस्टिंग्स एवं वेलेजली)
- 1785 ई. इंग्लैण्ड वापसी के बाद हाउस ऑफ लॉर्डस में महाभियोग का मुकदमा चलाया गया।
- 1784 ई. में सर विलियम जोंस एवं हेस्टिंग्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाली स्थापना करना।

लॉर्ड कार्नवालिस -: 1786 - 1793 (1805)

- **1790 - 92 ई .में तृतीय मैसूर युद्ध ।**
- 1792 ई. में श्रीरंगपटनम की संधि
- **1793 ई. में बंगाल एवं बिहार में स्थायी कर व्यवस्था जमींदारी प्रथा की शुरुआत।**
- 1793 ई. में न्यायिक सुधार ।
- **विभिन्न स्तरों के कोर्ट की स्थापना ।**
- **कर प्रशासन को न्यायिक प्रशासन से अलग करना।**
- **सिविल सर्विस की शुरुआत।**
- प्रशासन तथा शुद्धिकरण के लिए सुधार।
- स्थायी बंदोबस्त प्रणाली को इस्तमरारी, जमींदारी, माल गुजारी एवं बीसवेदारी आदि नाम से भी जाना जाता है ।

सर जॉन शोर (1793 - 98):-

- स्थायी बंदोबस्त (1993) को शुरू करने में इन्होंने 'राजस्व बोर्ड अध्यक्ष के रुप में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। लेकिन उनके गवर्नर जनरल काल में कोई महत्त्वपूर्ण घटना नहीं हुई।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) :-

- लॉर्ड वेलेजली 1798 से 1805 तक बंगाल का गवर्नर जनरल रहा। उसके कार्यकाल में अंतिम मैसूर युद्ध लड़ा गया।
- **इस युद्ध के बाद मैसूर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधीन आ गया।**
- लॉर्ड वेलेजली के काल में **द्वितीय मराठा युद्ध लड़ा गया था** जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई। यह कम्पनी राज के सबसे महत्त्वपूर्ण युद्धों में से एक था।
- पहले एंग्लो-मराठा युद्ध में मराठों की विजय हुई थी और दूसरे मराठा युद्ध में मराठों की पराजय हुई जिसका कारण मराठों के पास कोई अनुभवी और योग्य शासक न होना था।
- दूसरा मराठा युद्ध 1803 से 1805 तक लड़ा गया जिसके बाद मराठों का राज्य महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों में ही रह गया।
- औरंगाबाद, ग्वालियर, कटक, बालासोर, जयपुर, जोधपुर, गोहाद, अहमदनगर, भरोच, अजन्ता, अलीगढ़, मथुरा, दिल्ली ये सब अंग्रेजों के अधिकार में चले गए।
- सिंधिया और भोसले ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- **उसने सहायक संधि की शुरुआत** की जिसके तहत भारत के राजा ब्रिटिश सेना और अधिकारी को अपने राज्य में स्वीकार करेंगे, किसी भी विवाद में राजा ब्रिटिश सरकार को स्वीकार करेगा, वो ब्रिटिश के अलावा अन्य यूरोपियों को अपने यहाँ नौकरी पर नहीं रख सकता, इसके अलावा इस संधि में यह भी था कि राजा भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्रभुत्व स्वीकार करेंगे ।
- लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि को सर्वप्रथम मैसूर के राजा (1799), तंजौर के राजा (1799), अवध के नवाब (1801), पेशवा (1801), बरार के राजा (1803), सिंधिया (1804), जोधपुर, जयपुर, बूंदी और भरतपुर के राजा थे।
- उसने 10 जुलाई 1800 को फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- उसने 1799 में सेंसरशिप एक्ट पारित किए जिसका उद्देश्य फ्रांस की मीडिया पर नियंत्रण करना था।

नोटः

- सहायक संधि को स्वीकार करने वाला पहला शासक - अवध का नवाब (1765)
- वेलेजली की सहायक संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम शासक - हैदराबाद निजाम (1798)

लॉर्ड मिन्टो प्रथम (1807-13):-

- मिन्टो के पहले सर जॉर्ज बार्लो वर्ष (1805-07) के लिए गवर्नर जनरल बना ।
- वेल्लोर विद्रोह (1806) ।
- रंजीतसिंह के साथ अमृतसर की संधि(1809)।
- 1813 ई. का चार्टर एक्ट ।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)

- लॉर्ड हेस्टिंग्स 1813 से 1823 तक भारत का गवर्नर जनरल रहा। **उसके काल में दो महत्त्वपूर्ण युद्ध गुरखा युद्ध और तृतीय एंग्लो-मराठा युद्ध लड़े गए।**
- गुरखा युद्ध 1814 से 1816 तक लड़ा गया जिसमें ईस्ट इंडिया कम्पनी की जीत और गोरखों की हार हुई।
- गुरखाओं ने ब्रिटिश कम्पनी के क्षेत्र पर आक्रमण किया था, इस कारण गुरखा युद्ध लड़ा गया।
- इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत और गुरखाओं की हार हुई जिसके बाद गुरखों को गोरखपुर, सिक्किम और अन्य इलाके कम्पनी को देने पड़े।
- इसके अलावा तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध भी लॉर्ड हेस्टिंग्स के समय पर लड़ा गया जिसमें अंग्रेजों की पूर्णतया विजय हुई।
- इस युद्ध के बाद मराठा साम्राज्य का अंत हो गया।
- पेशवा को कानपुर के निकट बिठूर भेज दिया गया और उसे 8 लाख प्रतिवर्ष पेंशन दी गयी। उसके पुत्र **नाना साहब पेशवा ने 1857 की क्रांति का कानपुर में नेतृत्व किया।**
- राजपूताना के राजाओं ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- **उसने सेंसरशिप एक्ट को हटा लिया और स्वतंत्र प्रेस को समर्थन दिया।**
- उसके काल में समाचार दर्पण नामक समाचार पत्र 1818 में शुरू हुआ।

लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-28):-

- प्रथम आंग्ल बर्मा युद्ध (1824-26) इस युद्ध का अन्त 1826 ई. को हुई यांडबू की संधि से हुआ ।
- भरतपुर पर कब्जा (1826)।

लॉर्ड विलियम बैंटिक (1828 -1835)

- लॉर्ड विलियम बैंटिक 1828 से 1835 तक भारत का गवर्नर जनरल **रहा। उसका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सती प्रथा का अंत था।**
- उसके काल में एंग्लो-बर्मा युद्ध के कारण ईस्ट इंडिया कम्पनी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, उसने कम्पनी की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कार्य किए।
- उसने कम्पनी का खर्च 15 लाख स्टर्लिंग वार्षिक तक घटा दिया, मालवा में अफीम पर कर लगाया और कर व्यवस्था को मजबूत किया।
- उसने अपने काल में कई सामाजिक सुधार किए। **उसमें सती प्रथा और ठगी का अंत प्रमुख** था।
- सती प्रथा पर पहली रोक 1515 में पुर्तगालियों ने गोवा में लगाई, हालांकि इसका कोई फर्क नहीं पड़ा। इसके बाद 1798 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने कुछ हिस्सों में सती प्रथा पर रोक लगाई।
- राजा राममोहन राय ने 1812 से सती प्रथा के विरोध में आंदोलन शुरू किया, जिसके कारण 1829 में सती प्रथा पर रोक लगाई गई।
- राजपूताना में यह रोक बाद में लगी, **जयपुर स्टेट ने 1846 में सती प्रथा पर रोक लगाई।**
- उसने ठगों पर रोक लगाई। ठग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के स्थग से हुई है जिसका अर्थ होता है धूर्त। ठग प्राचीन भारत में लुटेरे होते थे। ठगों की शुरुआत मुस्लिम आक्रमणों के बाद हुई थी।
- ठगी पर रोक लगाने वाला योग्य अधिकारी कर्नल स्लीमन था। स्लीमन ने 1400 से अधिक ठगों को पकड़ा था। इसी प्रकार हजारों ठगों को पकड़ा गया, कई को फांसी दी गयी और कई को कारागार में बंद कर दिया गया।
- उसने अपने न्यायिक सुधारों के लिए जाना जाता है । उसने बिहार, बंगाल और उड़ीसा को 4 भागों में बांटा और कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, ढाका और पटना में 4 कोर्ट की स्थापना की गयी।
- उसने बंगाल प्रेसीडेंसी को 20 भागों में बांटा और प्रत्येक भाग में एक कमिश्नर नियुक्त किया।
- इलाहाबाद (प्रयागराज) में दीवानी और सदर निजामी अदालत शुरू की।
- मुंसिफ़ो और सदर अमीनों की नियुक्ति की गयी।

लॉर्ड ऑकलैंड (1836 - 42):-

- ऑकलैंड से पहले सर मैटकॉक जो कि एक छोटे समय लिए प्रशासन का प्रभारी बना था, ने 1835 में भारतीय प्रेसों को प्रतिबंधों से मुक्त पर दिया।
- प्रथम अफगान (1839-42), युद्ध में अंग्रेजों को भारी क्षति हुई एवं ऑकलैंड को वापस बुला लिया गया।
- रंजीत सिंह की मृत्यु (1839)
- 1839 ई. में इसने कलकता से दिल्ली तक ग्रेंड ट्रंक रोड (जी टी रोड) का मरम्मत करवाया ।
- इसी के शासन काल में **कलकता से दिल्ली तक (शेर शाह सूरी) के रोड़ का नाम बदलकर ग्रेंड ट्रंक रोड (जी टी रोड कर दिया गया ।**

लॉर्ड एलनबरो (1842 - 44):-

- प्रथम अफगान युद्ध की समाप्ति (1842)।
- सिंध पर कब्जा यानि सिंध विजय (1843)।
- ग्वालियर के साथ युद्ध (1843)।

- **विभिन्न नेता एवं संस्थाएं**

राजा राममोहन राय की उपलब्धियाँ 1774 से 1833

(i) पृष्ठ भूमि

- नवजागरण का अग्रदूत
- नवप्रभात का तारा
- आधुनिक भारत का पिता
- पूर्व व पश्चिम की संस्कृतियों का संश्लेषणकर्ता

(i) धार्मिक क्षेत्र

(ii) सामाजिक क्षेत्र में शिक्षा एवं पत्रकारिता

(iii) राजनीति क्षेत्र

पृष्ठभूमि

- **राजा राममोहन राय को पूर्व में पश्चिम की संस्कृतियों का संश्लेषणकर्ता कहा** गया उन्होंने पश्चिमी आधुनिक विज्ञान प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी भाषा का समर्थन किया तो साथ ही बांग्ला भाषा का व्याकरण संकलित कर देशी भाषा को भी महत्व दिया।
- इसी तरह उन्होंने भारतीय दर्शन के उपनिषदीय चिंतन अब ऐश्वर्य बात पर बल दिया और इस आधार पर उन्होंने मूर्ति पूजा में कर्मकांड की आलोचना की दूसरी तरफ मानव कल्याण की बात करने वाले ईसा मसीह के नैतिक के वचनों का समर्थन किया।
- इसी तरह वह प्रेस की स्वतंत्रता और व्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे पश्चिमी अवधारणाओं को भारत में लागू करने पर बल दे रहे थे। वस्तुतः वें सोच विचार कर पश्चिम के प्रगतिशील तत्वों को अपनाने पर बल देते रहे थे इस तरह वह आधुनिकीकरण के समर्थक थे पश्चिमीकरण के नहीं।

पश्चिमीकरण

- पश्चिम के विचारों बुल्लेया वस्तुओं को श्रेष्ठ मानकर उन्हें आंख मूंदकर अपनाना।
- **आधुनिकीकरण**
- पश्चिम के विचारों मूल्यों या वस्तुओं को आवश्यकतानुसार अपनाना।
- **आधुनिक विचार / मूल्य**
- संवैधानिक शासन, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, नागरिक अधिकार, प्रिंटिंग प्रेस, प्रतिनिधि सभा, समाचार पत्र, लोकतांत्रिक शासन, मानवाधिकार, कानून का शासन, व्यस्क मताधिकार, धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक खोजें / सिद्धांत।

धार्मिक के क्षेत्र में उपलब्धियाँ

- **राजा राममोहन राय ने मूर्ति पूजा का विरोध किया और एकेश्वरवाद को सभी धर्मों का मूल बताया।**
- उन्होंने कहा कि सभी धर्म सत्य है। किन्तु इसमें होने वाले कर्मकांड उन्हें दूषित करते हैं इसी क्रम में उन्होंने उपनिषद् द्वारा प्रतिपादित आत्मा की अमरता के सिद्धांत को स्वीकार किया।
- **राममोहन राय ने ताराचंद्र चक्रवर्ती व चंद्रशेखर देव के सुझाव पर 1828 में कोलकाता में ब्रह्म समाज की स्थापना की** जिसके प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं।

1. ईश्वर एक है और वह संसार का निर्माता है अंगरक्षक है वह निर्गुण और निराकार है
2. आत्मा अमर है।
3. आत्मिक उन्नति व ईश्वर की अनुभूति के लिए प्रार्थना आवश्यक है इसलिए मूर्ति पूजा अनावश्यक है।
4. किसी पुस्तक या व्यक्ति को मोक्ष या मुक्ति का साधन नहीं मानना चाहिए।
5. मनुष्य को अहिंसा का पालन करना चाहिए।

- धार्मिक क्षेत्र में ब्रह्म आश्रम आचरण की शुद्धता पर बल देता था इसका प्रमुख उद्देश्य हिन्दू धर्म को स्वच्छ बनाना है एकेश्वरवाद को प्रतिष्ठित करना था।
- ब्रह्म समाज के प्रत्येक सदस्य शनिवार को उपदेशआत्मक चर्चा में भाग लेते थे उनके कार्यक्रम में सभी धर्म ग्रंथों का पाठ होता था इस तरह ब्रह्म समाज में अंधविश्वास जात-पात का विरोध करते हुए आधुनिक शिक्षा पर बल दिया।

सामाजिक क्षेत्र में

- राजा राममोहन राय ने भारत की सामाजिक कुरीतियों जैसे सती प्रथा बाल विवाह विधवा प्रथा छुआछूत आदि का विरोध किया तथा स्त्री शिक्षा पर बल दिया इसके प्रयासों से 1829 में सती प्रथा निरोधक कानून बना।
- **सती प्रथा निरोधक कानून के निर्माण का विरोध राधाकांत देव ने किया उन्होंने 1930 में धर्म सभा की स्थापना की।**

शिक्षा व पत्रकारिता के क्षेत्र में

- राजा राममोहन राय आधुनिक शिक्षा के समर्थक थे और अंग्रेजी भाषा को पश्चिमी ज्ञान विज्ञान जानने के लिए जरूरी समझते थे इसी क्रम में उन्होंने उच्च व्यवसाय डेविड हेयर के सहयोग से कोलकाता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की।
- 1825 में कोलकाता में वेदान्त कॉलेज की स्थापना की जहां सामाजिक और वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी।
- राजा राममोहन राय को पत्रकारिता का अग्रदूत कहा जाता है वह प्रेस की स्वतंत्रता के समर्थक पर जिस तरह पश्चिम में पत्र-पत्रिकाओं को जन जागरूकता का साधन माना गया।
- उसी तरह उन्होंने भारत में भी प्रेस व स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जोड़ और विभिन्न भाषाओं में समाचार पत्र प्रकाशित किए जैसे फारसी में मीरातुल

अखबार और बंगला में संवाद कौमुदी अखबार प्रकाशित किए ।

राजनैतिक क्षेत्र में

- राजा राममोहन राय ने जनतंत्र और विभिन्न देशों में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन का समर्थन किया 1821 में नेप्लस इटली क्रांति की विफलता पर उन्होंने दुख: व्यक्ति किया साथ ही आयरलैंड के जमींदारों द्वारा वहां के किसानों पर किए जा रहे अत्याचार की निंदा की।
- राजा राममोहन राय ने भारत में जमींदारों के धनात्मक कार्रवाई की निंदा की और सरकार द्वारा कर मुक्त भूमि पर कर लगाए जाने का विरोध किया।
- राजा राममोहन राय ने सिविल सेवा के विस्तारीकरण की मांग की वह प्रथम भारतीय थे जिन्होंने ब्रिटिश संसद द्वारा भारतीय मामलों पर विचार के लिए आमंत्रित किया गया ।

ब्रह्म समाज से संबंधित अन्य तथ्य

- **राजा राममोहन राय मुग़ल सम्राट अकबर द्वितीय के पेंशन के मामलों को लेकर दूत के रूप में इंग्लैण्ड गए और सम्राट विलियम चतुर्थ के समक्ष उपस्थित हुए इसी क्रम में उन्हें अकबर द्वितीय ने राजा की उपाधि दी ।**
- 1835 में ब्रिस्टल इंग्लैण्ड में राजा राममोहन राय की मृत्यु हो गई ।
- राजा राममोहन राय जब इंग्लैण्ड गए थे तब उनकी अनुपस्थिति में भारत में ब्रह्म समाज का संचालन रामचंद्र विद्या ने किया ।
- राजा राममोहन राय की मृत्यु के पश्चात् ब्रह्म समाज का नेतृत्व देवेंद्र नाथ टैगोर ने किया देवेंद्र नाथ टैगोर ने बांग्ला भाषा में तत्वबोधिनी नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जो ब्रह्मसमाज का मुख्य पत्र था ।
- ब्रह्म समाज में पहला विभाजन 1866 में हुआ वस्तुतः केशव चंद्रसेन के उदारवादी विचारों के कारण देवेंद्र नाथ टैगोर से उनका मतभेद हुआ दरअसल देवेंद्र नाथ टैगोर ब्रह्म समाज में केवल हिन्दू धर्म ग्रंथों का प्रयोग पर बल दे रहे थे जबकि केशव चंद्रसेन सभी धर्म ग्रंथों के पाठ पर बल दे रहे थे तथा वे ब्रह्मसमाज को हिन्दू धर्म के दायरे से बाहर निकालना चाह रहे थे ।
- अतः इस विवाद के कारण ब्रह्मसमाज से अलग होकर केशव चंद्रसेन ने 1866 में भारतवर्षीय ब्रह्म समाज की स्थापना की जबकि देवेंद्र नाथ को आदि ब्रह्म समाज के नाम से जाना गया।
- केशव चंद्र सेन के प्रयास से ब्रह्मसमाज की शाखाएं बंगाल से बाहर बम्बई मद्रास और पंजाब में स्थापित हुई।
- केशव चंद्रसेन के प्रयास से 1872 में ब्रह्म विवाह अधिनियम पारित हुआ जिसके तहत बाल विवाह एवं पत्नी प्रथा को अवैध घोषित किया गया विवाह के लिए लड़के की उम्र 18 वर्ष लड़की की उम्र 14 वर्ष निर्धारित की गई यह अधिनियम ब्रह्म समाज के लोगों पर ही लागू होता था।
- 1878 में ब्रह्म समाज में पुणे में विभाजन हुआ वस्तुतः शिवनाथ शास्त्री एवं आनंद मोहन बोस ने केशव चंद्र सेन के प्रयासों से असंतुष्ट होकर साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना की दरअसल केशव चंद्रसेन ने अपनी नाबालिग पुत्री का विवाह कर दिया जिससे असंतुष्ट होकर साधारण ब्रह्मसमाज की स्थापना की गई थी ।

दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज

- **दयानंद सरस्वती ने 1875 में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की 1877 में इसका मुख्यालय लाहौर बनाया।**
- **दयानंद सरस्वती ने हिन्दू धर्म में व समाज में सुधार पर बल दिया अतः उन्हें हिन्दू लूथर भी कहा जाता है । जैसे यूरोप पर में ईशा धर्म सुधारकर मार्टिन लूथर था ।**
- **आर्य समाज को पश्चिमी विचारों के प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है वस्तुतः पश्चिमी विचारकों** ने भारतीय परम्परागत समाज एवं उनके धर्म ग्रंथ को पिछड़ा बताया अतः इसकी प्रतिक्रिया में दयानंद सरस्वती ने वेदों की ओर लौटो का नारा दिया तथा वेदों की व्याख्या आधुनिक संदर्भ में की ।
- वस्तुतः आरंभिक वैदिक काल में बाल विवाह सती प्रथा छुआछूत लैंगिक भेद मूर्ति पूजा धार्मिक आडंबर जैसे कुरुतियाँ मौजूद नहीं थी बल्कि समतामूलक समाज था । और स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था दूसरी तरफ 19 वीं सदी के भारतीय समाज में अनेक कुरुतियाँ मौजूद थी ।
- ऐसे में दयानंद सरस्वती ने वेदों को प्रमाण मानते हुए समाज में मौजूद कुरुतियों को समाप्त करने पर बल दिया । वस्तुतः 19वीं सदी में पश्चिमी जगत अर्थात् यूरोपियों द्वारा भारतीय धर्म संस्कृति को पिछड़ा बताते हुए ईसाई करण पर बल दिया जा रहा था इसी क्रम में आर्य समाज में भारत में आरंभिक वैदिक संस्कृति को आधार बनाते हुए उसकी श्रेष्ठता उद्घाटित की।

आर्य समाज के सिद्धांत

1. ईश्वर निराकार, और अमर है, वह सत्त, चित्त और आनंद है। वह सृष्टा, पालक और रक्षक है। सबको उसकी उपासना करनी चाहिए।
2. वेद सत्य ज्ञान के स्त्रोत है, प्रत्येक कार्य के लिए इनका अध्ययन, मनन-चिंतन और प्रचार आवश्यक है।
3. बहु-देववाद और मूर्तिपूजा का खंडन तथा अवतारवाद और तीर्थ-यात्रा का विरोध।

- चंपारण सत्याग्रह 1917 में किसान हित के लिए गाँधी ने छुआछूत के विरोध में सितंबर 1932 में अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी लीग की स्थापना की।

अध्याय – 4

स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन

1945 -1947 के बीच का भारत :

- वैवेल योजना - जून 1945
- आजाद हिंद फौज एवं लाल किला मुकदमा – नवम्बर 1945
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह –फरवरी 1946
- कैबिनेट मिशन – मार्च 1946
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली की घोषणा – 20 फरवरी 1947
- माउंटबेटन योजना – 3 जून 1947

वैवेल योजना (1945) -वायसराय वैवेल ने 1945 में एक राजनीतिक सुधार की योजना प्रस्तुत की जिसे वेवेल योजना के नाम से जाना जाता है।

- **इस योजना के अनुसार वायसराय के कार्यकारिणी का पुर्नगठन किया जाना था। इस उद्देश्य से राजनीतिक नेताओं को जेल से रिहा किया गया और जून 1995 में शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।**
- ब्रिटिश सरकार इन राजनीतिक सुधारों के लिए इसलिए उत्साहित थी कि 1945 में इंग्लैण्ड में चुनाव होने वाले थे और वहाँ की सरकार यह प्रदर्शित करना चाहती थी कि वह भारत में समस्या समाधान के प्रति गंभीर है।

वैवेल योजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रावधान रखे गए :

(i) वायसराय एवं कमांडर-इन चीफ को छोड़कर वायसराय की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भारतीय होंगे और परिषद् में हिंदू मुसलमानों की संख्या बराबर रखी जाएगी।

(ii) वायसराय वीटो पावर के प्रयोग का प्रयास नहीं करेगा।

- इस योजना के संदर्भ में मुस्लिम लीग चाहती थी कि उसे ही भारत मुसलमानों का एक मात्र दल माना जाए वायसराय की कार्यकारिणी में मुस्लिम लीग के बाहर का कोई मुसलमान नहीं होना चाहिए।
- दूसरी तरफ कांग्रेस ने इस सूची के लिए दो मुस्लिम सदस्यों- मौलाना आजाद एवं अब्दुलगफ्फार खाँ को नियुक्त किया जिसका जिन्ना ने विरोध किया। अतः वायसराय वैवेल ने जिन्ना की आपत्ति देखते हुए सम्मेलन को असफल घोषित कर समाप्त कर दिया।
- कांग्रेस ने जिन्ना के मत को इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से कांग्रेस एक साम्प्रदायिक दल अर्थात् हिंदू दल के रूप में जाना जाता और भारत के मुसलमानों का एकमात्र दल मुस्लिम लीग को माना जाता । इससे मुस्लिम लीग की भारत विभाजन की माँग और मजबूत हो जाती।

आजाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA) :-

- **INA की स्थापना 1942 में मोहन सिंह ने की थी।** जापानी मेजर फूजीवारा ने मोहन सिंह को इसके गठन का सुझाव दिया था । उन्होंने मोहन सिंह से कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए जापानियों के साथ मिलकर कार्य करें ।
- वस्तुतः मोहन सिंह ब्रिटिश सेना में एक भारतीय सैन्यअधिकारी थे और जब ब्रिटिश सेना दक्षिण पूर्व एशिया से पीछे रह रही थी तो मोहन सिंह जापानियों के साथ हो गए। इसी क्रम में 1 सितम्बर 1942 को मोहन सिंह के अधीन मलाया में INA का गठन हुआ।
- **INA का दूसरा चरण उस समय आया जब सुभाष चन्द्र बोस 2 जुलाई 1943 में सिंगापुर पंहुचे और वहां से उन्होंने "दिल्ली चलो" का नारा दिया ।** यहाँ क्रांतिकारी नेता रास बिहारी बोस ने उन्हें सहयोग दिया। अतः सुभाष चन्द्रबोस ने 21 अक्तूबर 1943 आजाद हिंद फौज के नाम से एक अस्थायी सरकार का गठन किया। इसका मुख्यालय सिंगापुर के साथ-साथ रंगून(म्यांमार) में भी बनाया गया ।
- बोस की सरकार ने Uk और USA के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और गाँधी, नेहरू एवं सुभाष नामक सैन्य टुकड़ी का गठन किया तो **महिलाओं के लिए रानी झाँसी रेजिमेंट का गठन किया ।**
- 6 जुलाई 1944 में सुभाष चन्द्र बोस ने एक रेडियो संदेश में कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतिम युद्ध शुरू हो चुका हमारे राष्ट्रपिता भारतीय स्वतंत्रता के इस युद्ध में हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।
- शहनवाज खान के नेतृत्व में INA की सैन्य टुकड़ी जापानियों के साथ मिलकर भारत - बर्मा सीमा पर हमला करने के लिए इंफाल भेजी गयी किंतु जब जापानियों की विश्व युद्ध में पराजय होने लगी तब उनके साथ-साथ आजाद हिंद फौज के सैनिकों को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा और उन पर मुकदमा चला।

लाल किला मुकद्मा (नवम्बर 1945):

- आजाद हिंद फौज के बंदी सैनिकों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा लाल किले में मुकदमा चलाया गया। फ़ौज के शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह ढिल्लो एवं प्रेम कुमार सहगल को एक ही कठघरे में खड़ा किया गया।
- नेहरू ने सरकार से इन गुमराह देश भक्तों के प्रति उदारता दिखाने की अपील की। इसी क्रम में कांग्रेस ने सैनिकों के बचाव हेतु एकआजाद हिंद फौज समिति का गठन किया।
- लाल किले मुकदमे में बचाव पक्ष का नेतृत्व 'भूलाभाई देसाई' कर रहे थे। नेहरू ने इस मुकदमे के दौरान 25 वर्ष पश्चात् काली कोट पहनी।
- लाल किले मुकदमे के संदर्भ में कैदियों को सभी राजनीतिक दलो जैसे - कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी आदि का समर्थन प्राप्त था। मुकदमे के दौरान जनता ने सक्रिय भूमिका निभायी देश भर में हड़ताल और प्रदर्शन का आयोजन किया गया। समाचार पत्रों में लेख लिखे गए।
- आजाद हिंद सप्ताह (11 नवम्बर) को आयोजन किया गया तथा **12 नवम्बर 1945 को आजाद हिंद दिवस मनाया गया।**
- इसी तरह **अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में इन युद्ध बंदियों को रिहा करने की मांग की गयी।** साथ ही, सरकारी कर्मचारी एवं सेना के लोग भी सरकार के विरुद्ध हो गए। वे सरकार विरोधी सभाओं में जाते थे और चंदा भी देते थे।
- मुकदमे के संदर्भ में आंदोलन में भारतीय जनता के राष्ट्रवाद का परिपक्व रूप दिखाई पड़ा। वस्तुतः भारत बनाम इंग्लैण्ड का मुद्दा स्पष्ट हो गया और भारतीय का आंदोलन पूर्णतः आजादी के रंग में रंगने लगा। अतः सरकार ने भी घोषणा की कि उन्हीं कैदियों पर मुकदमा चलेगा जिस पर बर्बरता एवं हत्या का आरोप है।
- आजाद हिंद फौज के कैप्टन अब्दुल रशीद को 7 वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ जिसका नेतृत्व मुस्लिम लीग के छात्रों ने किया। इसमें कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी के छात्र संगठन भी शामिल हुए।

शाही भारतीय नौसेना विद्रोह (18 फरवरी 1946) - **बाम्बे बंदरगाह पर खड़े हुए नौसैनिक प्रशिक्षण जहाज 'तलवार पर नाविकों ने ब्रिटिश नस्लवादी व्यवहार एवं सुविधाओं में कमी के मुद्दे पर ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। इसी क्रम में नाविक पी.सी दत्त ने'तलवार' की दीवारों पर अंग्रेजों भारत छोड़ों लिख दिया ।**

- फलतः उन्हें गिरफ्तार किया गया। इसी क्रम में द शाही नौसेना के नाविकों ने सरकार से उन्हें रिहा करने की मांग की तो साथ ही आजाद हिंद फौज के बंदियों की रिहाई एवं इण्डोनेशिया से भारतीय सैनिकों के वापसी की मांग की शीघ्र ही यह विद्रोह अन्य जहाजों पर भी फैल गया और नाविकों ने सरकारी आदेश को मानने से इंकार कर दिया। यह विद्रोह 1857 के विद्रोह की याद ताजा करता है।
- वस्तुतः 1857 का विद्रोह भी नागरिक असंतोष को व्यक्त करता है जिसकी शुरुआत सैन्य छावनी से सैनिक असंतोष के रूप में हुई थी और इसमें सैनिकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में असैनिक भी सम्मिलित राष्ट्रीय चेतना से मुक्त न होते हुए भी यह विद्रोह राष्ट्रीय चेतना के विकास में अपनी भूमिका निभाता है। इस दृष्टि से इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कोटि में रखा जाता है।

- मुगल चित्रकला शैली का विकास फारसी और हिंदू चित्रकला के मिश्रण से हुआ। अकबर ने चित्रकला को प्रोत्साहन दिया। मुगल शासकों ने भी चित्रकला को प्रोत्साहन दिया।
- जहाँगीर का समय- जहाँगीर के समय को मध्यकालीन चित्रकला का स्वर्णयुग कहा जाता है।
- जहाँगीर के दरबार में मंसूर, बिशनदास और मनोहर जैसे चित्रकार सुशोभित थे।
- जहाँगीर एक चित्रकृति में अलग-अलग चित्रकारों द्वारा बनाई गयी कृतियों को अलग पहचान सकता था।

मुगल शैली

- मुगल चित्रकला शैली भारतीय, फारसी और मुस्लिम मिश्रण का विशिष्ट उदाहरण है।
- अकबर के शासनकाल में लघु चित्रकारी के क्षेत्र में भारत में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। उसके काल की एक उत्कृष्ट कृति हमजानामा है।
- मुगल चित्रकला नाटकीय कौशल और तूलिका के गहरेपन के लिए विख्यात है।
- जहांगीर खुद भी एक अच्छा चित्रकार था। उसने अपने चित्रकारों को छविचित्रों व दरबारी दृश्यों को बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।
- उस्ताद मंसूर, अब्दुल हसन और बिशनदास उसके दरबार के सबसे अच्छे चित्रकार थे।
- शाहजहां के काल में चित्रकारी के क्षेत्र में कोई ज्यादा कार्य नहीं हुआ, क्योंकि वह स्थापत्य व वास्तु कला में ज्यादा रुचि रखता था।

अध्याय – 3

भारतीय नृत्य कलाएँ

भरतनाट्यम

- भरतनाट्यम भारतीय नृत्य कला शैली का विकास तमिलनाडु में हुआ।
- भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से भारतीय नृत्य कला की इस शैली की जानकारी प्राप्त होती है।
- भरतनाट्यम का नाम भरतमुनि तथा नाट्यम शब्द से मिलकर बना है। तमिल में नाट्यम शब्द का अर्थ नृत्य होता है।
- नंदिकेश्वर द्वारा रचित अभिनय दर्पण भरतनाट्यम नृत्य में शरीर की गतिविधि के व्याकरण और तकनीकी अध्ययन के लिए ग्रंथीय सामग्री का एक प्रमुख स्त्रोत है।
- चिंदबरम मंदिर के गोपुरमों पर भरतनाट्यम नृत्य की भंगिमाओं की एक श्रृंखला और मूर्तिकार द्वारा पत्थर को काटकर बनाई गई प्रतिमाएं देखी जा सकती हैं।
- भरतनाट्यम नृत्य को एकहार्य के रूप में भी जाना जाता है, जहाँ नर्तकी एकल प्रस्तुति में अनेक भूमिकाएं करती हैं।
- राजा सरफोजी के संरक्षण के तहत तंजौर के प्रसिद्ध चार भाइयों ने भरतनाट्यम के उस रंगपटल का निर्माण किया था, जो हमें आज दिखाई देता है।
- देवदासियों द्वारा इस शैली को जीवित रखा गया। देवदासी वास्तव में वे युवतियां होती थी । जो अपने माता-पिता द्वारा मंदिर को दान में दे दी जाती थी। उनका विवाह देवताओं से होता था।
- देवदासियाँ मंदिर के प्रांगण में देवताओं को अर्पण के रूप में संगीत व नृत्य प्रस्तुत करती थीं। इस सदी के कुछ प्रसिद्ध गुरुओं और अनुपालकों का संबंध देवदासी परिवारों से है जिनमें बाला सरस्वती एक बहुत परिचित नाम है।

कथकली नृत्य

- कथकली नृत्य केरल का शास्त्रीय नृत्य है।
- चाकिद्दारकुत्त, कूडियाट्टम कृष्णानाट्टम और रामानाट्टम केरल की कुछ अनुष्ठानिक निष्पादन कलाएं है, जिनका कथकली के प्रारूप और तकनीक पर सीधा प्रभाव है।
- कथकली नृत्य संगीत और अभिनय का वर्णन है। इसमें अधिकतर भारतीय महाकाव्यों से ली गई कथाओं का नाटकीकरण किया जाता है।
- कथकती नृत्य में कर्नाटक रागों का भी प्रयोग होता है ।

कथक नृत्य

- कथक शब्द की उत्पत्ति कथा शब्द से हुई है, जिसका अर्थ एक कहानी से है।
- ब्रजभूमि की रासलीला से उत्पन्न कथक उत्तर प्रदेश की एक परंपरागत नृत्य विधा है।

प्रसिद्ध घराने

- **लखनऊ घराना**
- 19वीं सदी में अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण के तहत भारतीय नृत्य कला के अंतर्गत कथक का स्वर्णिम युग देखने को मिलता है।
- नवाब ने लखनऊ घराने को अभिव्यक्ति तथा
- भाव पर उसके प्रभावशाली रूप से स्थापित किया।
- इस घराने के नृत्य पर मुगल प्रभाव के कारण नृत्य में श्रृंगारिकता के साथ-साथ अभिनय पक्ष पर भी विशेष ध्यान दिया।
- इस घराने को पहचान दिलाने में पंडित लच्छू महाराज, पंडित बिरजू महाराज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

जयपुर घराना

- जयपुर घराना अपनी लयकारी या लयात्मक प्रवीणता के लिए जाना जाता है। इस घराने के नृत्य के दौरान पाँव की तैयारी, अंग संचालन तथा नृत्य की गति पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- इसे शीर्ष पर पहुंचाने में उमा शर्मा, प्रेरणा श्री माली, शोभना नारायण, राजेन्द्र गंगानी और जगदीश गंगानी ने पर्याप्त योगदान दिया है।

बनारस घराना

- इस घराने में श्रृंगारिकता के स्थान पर प्राचीन शैली पर अधिक बल दिया गया। यह जानकी प्रसाद के संरक्षण में विकसित हुआ। इस घराने के नाम पर प्रख्यात नृत्यगुरु सितारा देवी के पश्चात् उनकी पुत्री जयंतीमाला ने इसकी छवि को बनाये रखने का प्रयास किया।

रायगढ़ घराना

- अन्य सभी घरानों से नया माना जाता है। इसकी स्थापना रायगढ़ के महाराजा चक्रधर सिंह के आश्रय में पंडित जयलाल, पंडित सीताराम, हनुमान प्रसाद और लखनऊ घराने के पंडित अच्छन महाराज तथा पंडित लच्छू महाराज द्वारा की गयी। यह आघातपूर्ण संगीत पर बल देने हेतु महत्वपूर्ण है।

कुचिपुड़ी नृत्य

- कुचिपुड़ी आन्ध्र प्रदेश की एक नृत्य शैली है।
- यह भारतीय नृत्य की एक पारंपरिक शैली है। मूलतः कुस्सेल्वा के नाम से विख्यात ग्राम-ग्राम जाकर प्रस्तुति देने वाले अभिनेताओं के समूह के द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली विधा है। आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में कुचिपुड़ी नामक गांव है।
- 17वीं शताब्दी में एक प्रतिभाशाली वैष्णव कवि तथा द्रष्टा सिद्धेन्द्र योगी ने यक्षगान के रूप में कुचिपुड़ी शैली की कल्पना की, जिनमें अपनी कल्पनाओं को मूर्ति एवं साकार रूप प्रदान करने की अद्भुत क्षमता थी।
- सिद्धेन्द्र योगी के अनुयायियों अथवा शिष्यों ने कई नाटकों की रचना की और आज भी कुचिपुड़ी नृत्य-नाटक की परंपरा विद्यमान है।
- इस शैली में एकल नृत्य प्रस्तुति व स्त्री नर्तकियों के प्रशिक्षण सहित अनेक नए तत्वों समावेशन लक्ष्मी नारायण शास्त्री ने किया।
- पहले भी एकल नृत्य प्रस्तुति विद्यमान थी, पर वह केवल समुचित कार्यों में नृत्य-नाटकों के एक भाग के रूप में की थी।
- अब कुचिपुड़ी नृत्य की दो शैलियां है ।
- नृत्य नाटक
- एकल नृत्य नाटक

मोहिनीअट्टम

- मोहिनीअट्टम की शाब्दिक व्याख्या मोहिनी के नृत्य के रूप में की जाती है।
- हिन्दू पौराणिक गाथा की दिव्य मोहिनी केरल का शास्त्रीय एकल नृत्य-रूप है। मोहिनी अर्थात् सुन्दर नारी तथा अट्टम अर्थात् नृत्य है।
- यह नृत्य केवल स्त्रियों द्वारा निष्पादित किया जाता है।
- केरल के इस नृत्य की संरचना त्रवणकोर राजाओं महाराजा कार्तिक तिरुनल और उसके उत्तराधिकारी महाराजा स्वाति तिरुनल द्वारा वर्तमान शास्त्रीय स्वरूप में की गई थी।
- इसका उद्भव केरल के मंदिरों में हुआ।

ओडिसी नृत्य

- ओडिसा के इस नृत्य को पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर सबसे पुरातन जीवित शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक माना जाता है।
- इंद्रीय और गायन के रूप में ओडिसी प्रेम और भाव, 'देवताओं और मानव से जुड़ा सांसारिक और लोकोत्तर नृत्य है। दक्षिणी-पूर्वी शैली उधरा मगध शैली के रूप में जानी जाती है, जिसमें वर्तमान ओडिसी को प्राचीन अग्रदूत दूत के रूप में पहचाना जा सकता है।
- भुवनेश्वर के पास उदयगिरि और खण्डगिरि की गुफाओं से इस नृत्य रूप के दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के पुरातात्विक प्रमाण पाए जाते हैं।
- ओडिसी एक उच्च शैली का नृत्य है और कुछ मात्र में शास्त्रीय नाटक शास्त्र तथा अभिनय दर्पण पर आधारित है।
- जयदेव द्वारा रचित 12वीं सदी के गीत गोविन्द के बारे में सत्य है।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/d5wdiv 1 web.- https://shorturl.at/besw4

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
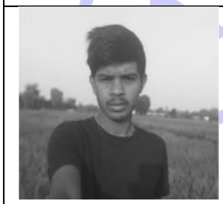	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.-Biramganj, Dis.-Raisen, MP
N.A.	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A.	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A.	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A.	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A.	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A.	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A.	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
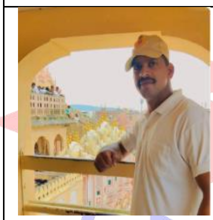	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A.	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A.	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/d5wdiv

Online order करें – https://shorturl.at/besw4

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE